शोध ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-29 **VOLUME-3** ISSN-2454-6283 **July-sept.**–2022

IMPACT FACTOR - **(IIJIF-7.312)** **SJIF-6.586,** IIFS-4.125,

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक

डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड

9405384672

तकनीकी सम्पादक

अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–

महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

34.महानगरीय यांत्रिक सभ्यता के कारण टूटते मध्यवर्गीय परिवार की करुण गाथा–'समुद्र में खोया हुआ आदमी'

–श्री.अनिल शिवाजी झोळ
सहा.प्राध्यापक,
हिंदी विभाग, वाघीरे महाविद्यालय, सासवड, तह.पुरंदर, जि.पुणे

कमलेश्वर द्वारा लिखित 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' इस उपन्यास का आधार निम्न मध्यवर्गीय परिवार की कहानी है। कमलेश्वर के अभी तक लिखे हुए लघु उपन्यासों में 'समुद्र में खोया हुआ आदमी' सबसे सफल उपन्यास रहा है। विशेष रूप से यथार्थ की दृष्टि से वैसे जिस मध्यवर्गीय परिवार की कथा इस उपन्यास में कही गई है, वह अकेले ही दिल्ली की नहीं, भारत के किसी भी महानगर की हो सकती है। समुद्र में खोया हुआ आदमी बीरन नहीं स्वयं श्यामलाल है। वह भीषण असमानताओं के समुद्र में खो गया है। उसका परिवार और वह स्वयं भीड़ के सैलाब में कहीं खो गए हैं। यह उपन्यास आजादी के बाद के भारत का उपन्यास है। कथात्मक स्तर पर यह एक टूटते हुए परिवार की कहानी है। बेरहम महानगर में धीरे–धीरे टूटते हुए परिवार की करूण गाथा। आधुनिक जीवन की सामान्य सुविधाओं के लिए हर व्यक्ति लालायित है, पर उसे सुविधाएँ उन छोटे शहरों, कस्बों या गाँवों में नहीं मिल रही है, जहाँ वह रहता है। ऐसी स्थिति में हर आदमी बड़े नगर की और भाग रहा है, क्योंकि उसे लगता है कि वहाँ वे सुविधाएँ भी है और काम के अवसर भी अधिक हैं। लेकिन इस भागमभाग के पीछे सबसे बड़ा कारण है– भविष्य की अनिश्चितता। कोई भी व्यक्ति भविष्य के प्रति आश्वस्त नहीं है। उसे पता नहीं कि कल क्या होने वाला है। वह नितांत असुरक्षित महसूस करता है और इसी भय को वह साहस का नाम देकर महानगरों की ओर भागता है। यह वे महानगर हैं, जिनकी अतल गहराइयों और तूफानों का पता तब तक नहीं चलता, जब तक आदमी उसमें उत्तर नहीं जाता।

महानगरीय जीवन के दबाव के नीचे सारे रिश्ते, जिन्हें हम कलेजे से लगाए जीते रहे हैं, भिन्न–भिन्न हो जाते हैं और खून के रिश्ते तक बदलने लगते हैं। यहाँ आकर हर व्यक्ति अकेला हो जाता है और अपने अस्तित्व तथा सार्थकता की खोज करता है। पिता–पुत्र, पति–पत्नी, माँ–बेटी आदि के खून के रिश्ते व्यर्थ होकर भी बने रहते हैं। पर उनके आंतरिक संतुलन बदलने लगते हैं क्योंकि महानगर की संस्कृति मात्र पुरुष आश्रित या पिता आश्रित नहीं है। वह एक–एक अंश पर आश्रित है। यहाँ मशीन का हर पुर्जा महत्वपूर्ण है। यदि छोटा–सा पुर्जा भी टूट जाए या काम न करे तो मशीन ठप हो जाती है। कठिनाई यह है कि भारतीय परिवारों ने इस यथार्थ को मन से अभी स्वीकार नहीं किया है। जहाँ–जहाँ मजबूरी में इस नए संतुलन को मंजूर भी किया गया है, वहाँ एक भीतरी संस्कारगत प्रतिरोध अब भी बाकी है।श्यामलाल के परिवार में उनकी पत्नी रम्मी, दो बेटियां तारा और समीरा तथा बेटा वीरेन आदि सदस्य है। उनका परिवार दिल्ली चला तो आया है पर वह इसी स्वीकार–अस्वीकार के भँवर जाल में चकराता रहता है, क्योंकि श्यामलाल उसे अकेले चलाने का परंपरागत दंभ रखते हैं। वे इस सत्य को स्वीकार नहीं कर पाते कि वे एक नई व्यवस्था के दबाव में है। इस व्यवस्था के अनुकूल और अनुरूप बनने के लिए उन्हें अपने दृष्टिकोण, संस्कार और विश्वासों में आमूल परिवर्तन स्वीकार करना होगा। अपनी लड़कियों को लेकर भी वह उसी पुरानी और दकियानूसी परंपरा के गुलाम है, जहाँ लडकियाँ अपने बाप के इशारों पर चलती है और गऊ की तरह अपने अभिभावकों के फैसले को स्वीकार कर जिंदगी भर घुटती ही रहती है। कठिनाई यह है कि पिता की सत्ता का जो अनिवार्य विघटन महानगर की संस्कृति में होता है, वह यहाँ नहीं हो पाता और पुराने मूल्यों और परिवार सत्ता का नवीनीकरण अवरुद्ध हो जाता है। श्यामलाल के मन में पुराने के लिए वह आदर है, जो नई महानगर संस्कृति में व्यर्थ हो चुका है, पर शामलाल उस पुराने से अपने को तोड़ नहीं पाते। इस बदली हुई स्थिति को श्यामलाल महसूस तो करते थे पर स्वीकार नहीं कर पाते थे। वे इस परिवर्तन को शब्द भी नहीं दे पाते थे। यानी वे यंत्र–सभ्यता द्वारा निरंतर अकेले किए जा रहे व्यक्ति की सत्ता को सह नहीं पा रहे थे।महानगरों का पहला दबाव परिवार नाम की संस्था पर पडता है। यह दबाव घर परिवार को तोड़ता है और भावनात्मक संबंधों को व्यावहारिक संबंधों में बदल देता है। जिस समय श्यामलाल का परिवार इस आंतरिक परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजर रहा होता है उसी समय बीरन के खो जाने की दुर्घटना हो जाती है। चरनजीत सिंह दुखद समाचार देता हैं, "सिंगापुर से चलने से पहले हम लोगों ने रात का खाना साथ ही खाया था। सुबह हुई तो उसका कोई पता नहीं लगा। एक खलासी डेक पर गया, तो उसने वीरेंद्र की चप्पलें रेलिंग के पास पड़ी देखी थीं। जब पी. टी. के वक्त वह नहीं आया तब तलाश की गई। जहाज पर नहीं मिला। उसके बाद से उसका कोई पता नहीं है।"[1] बीरन यानी घर का भविष्य। और गहराई में जाकर देखें तो सबका भविष्य। क्योंकि यह कहानी सिर्फ श्यामलाल के परिवार की नहीं है। यह निम्न मध्यवर्गीय घरों की कहानी है, वे घर जो भीतर से टूटते जा रहे है, जिनके सामने कोई भविष्य था ही नहीं, या फिर जिनका भविष्य बीरन की तरह खो गया है। और सिर्फ एक इंतजार बाकी है। कभी न समाप्त होने वाली दारुण प्रतीक्षा। और ऐसे में श्यामलाल अपनी स्थिति पहचानते हैं कि सचमुच अब वे बिलकुल अकेले हो गए हैं, कि उस महानगर में अब कोई भी ऐसा नहीं है, जो उन्हें सहारा दे सके या किसी किनारे तक पहुंचा सके।

बीरन के खो जाने या मृत्यु के बाद या उसके कभी ना लौट कर आने की सच्चाई को स्वीकार कर लेने के बाद ही श्यामलाल सोचते हैं, कि काश समीरा कुछ बन गई होती। काश उस लड़की ने उन्हें सिर्फ जन्मदाता माना होता, पिता नाम की क्रूर सताने उसका भविष्य न अवरुद्ध कर दिया होता। "समीरा ने उन्हें जन्मदाता माना होता और उन्हें पिता न मानकर अगर वह अपनी जिंदगी खोज सकी